Quadrant II – Notes

Programme : Bachelor of Arts (Third Year)

Subject **:** Hindi

Semester **:** IV

Paper code **:** HND 105

Paper title **:** भारतीय साहित्य

Title of the unit: Unit III – भारतीय साहित्य(चेम्मीन/मछुआरे-तकषी शिवशंकर पिल्लै)

(मलयालम उपन्यास)

Module Name : मछुआरे उपन्यास का परिवेश और भारतीय संस्कृति

Module Number **:** 10

Name of the Presenter: Dr. Vaishali Naik

मछुआरे उपन्यास का परिवेश और भारतीय संस्कृति

भारतीय समाज विविध धर्मों, संप्रदायों एवं प्रांतों में विभक्त है। फिर भी उसमें उत्पन्न होनेवाली समस्याएँ एक - सी हैं। समाज, जाति, संप्रदाय, मान्यताओँ और तौर-तरिकों आँचल विशेष के कारण समस्याओं के उत्पन्न होने का माध्यम अलग हो सकता है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य बहुआयामी है। भारतीय साहित्य के भावजगत में अंतर नहीं अपितु उस भाव को प्रकट करने वाली लेखनी की भाषा का अन्तर है। इस देश में भाषा के आधार पर प्रांतों की रचना की गई है। उन तमाम प्रांतों की अपनी भाषा व अपना साहित्य है। जब हम भारतीय साहित्य की बात करते हैं तो हमारी दृष्टि एक विचार और एक संवेदना पर होती है। देश, काल और वातावरण को नहीं देखती। भारत एक इकाई है और जिसकी संस्कृति एक है। सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का मूल स्वर एक है। प्राचीन काल से लेकर अब तक के भारतीय साहित्य में राष्ट्र निर्माण एवं विकास, समाज-सुधार एवं व्यवस्था के प्रति समान विचार मिलते है। भाषा, जाति, क्षेत्र, धर्मा से उसका कोई संबंध नहीं। भारतीय साहित्य द्वारा भारतीय लोकमानस की अभिव्यक्ति होती है। ये प्रादेशिकता ही उसकी विशिष्टता है

उपन्यास जीवन का बहुरंगी और बहुविध तस्वीर होता है। भारतीय जीवन की व्यापकता और विविधता भारतीय उपन्यास को व्यापक और विविध बनाती है।आज भारतीय उपन्यास ने अपनी एक पहचान बनाई है। इसका कारण है लोक जीवन से इसका गहरा जुड़ाव। यही लोक जीवन भारतीय उपन्यास को ठेठ भारतीय बनाता है। भारतीय उपन्यासों में जब भी लोक जीवन की प्रधानता होती है उसे आंचलिकता, प्रादेशिकता, क्षेत्रियता और न जाने किन-किन अलंकरणों से युक्त किया जाता है। ये कृतियाँ लोक जीवन से, भारत की मिट्टी की सुगंध से सुवासित भारतीय धरोहर है जिसे अलग-अलग अंचलों में बाँटकर देखना गलत होगा। भारतीय उपन्यास की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। जिस प्रकार हर आदमी एक दूसरे से अलग है, उसी प्रकार हर उपन्यास एक दूसरे से अलग हैं। सब अपनी-अपनी विशिष्टता से युक्त है।

भारतीय उपन्यासकार तकषि शिवशंकर पिल्लै का मलयासी उपन्यास चेम्मीन जो हिंदी में मछुआरे नाम से अनुवादित हुआ है ऐसी ही एक विशिष्ट उपन्यास है। जिसमें केरल के तृक्कुन्तपुषा और नीर्क्कुन्नम तट पर रहने वाले और समुद्र- माता की कोंख से अपना पेट भरने वाले संघर्षरत गरीब मछुआरे की जिंदगी का मर्मस्पर्शी, जीवंत और त्रासद चित्रण किया है। इसमें कोई भाषण या बयानाबाजी नहीं है । बस मछुआरें की जिंदगी के संघर्ष के कुछ पल हैं जिससे जुड़कर पाठक एक परिचित यथार्थ का एक नया लोकेल का भिन्न साक्षात्कार करता है। औरत की अस्मिता और समाज और परिवार में उसका स्थान- यही इस उपन्यास का मुख्य विषय़ और सवाल भी है। और उपन्यासकार का यही विजन, टीट्रमेंट और संवेदना इसे व्यापक धरातल पर खड़ा कर पूरे भारत से ही नहीं पूरे विश्व के सरोकार से जोड़ती है। एक मछुआरे की महत्वकांक्षा, प्रेमी युगल में प्रेम की फूटती कोंपल और भारतीय मानस और खासकर मछुआरों के संस्कार में स्त्री की पवित्रता की अवधारणा से इस उपन्यास की शुरूआत होती है। उपन्यास के ये तीनों कोण आपस में इस तरह संबंधित है, जिससे संबंधों में रगड़ पैदा होती है और कई बार चिंनगारियाँ उड़ती है। पिता की महत्वकांक्षा और बेटी के प्यार में पिता ही जीतता है और बेटी का प्यार हलाल कर दिया जाता है। करुत्तम्मा चेम्पन नाम के महत्वकांक्षी और मेहनती मल्लाह की बड़ी लड़की है जो अपनी नाव और जाल खरीदना चाहता है, पर उस के लिए पैसो का जुगाड़ नहीं हो पाता। इसी

बीच करुत्तम्मा अपने बास सखा परीकुट्टी यानी मोतलाली से अपने पिता की नाव और जाल खरीदने की योजना बता देती है और धन की व्यवस्था न हो पाने की बात भी वह सहजता से बता डालती है। हँसी- हँसी में वह पैसे भी माँगती है। लेकिन यही ठिठोली उसे मँहगी पड़ती है कि उसका जीवन और उसका सारा परिवार बिखर जाता है। परी अपनी प्रियतमा की इच्छा पूरी करने के लिए अपना सब कुछ लुटा देता है। वह अपनी जमा-पूँजी, लागत तोड़कर अपनी प्रियतमा के पिता को धन देता है। बाद में पिता परीकुट्टी को दुत्कार देता है, उसे मछली नहीं देता। परी के पास पैसे नहीं बचे हैं वह नकद पैसे देकर मछली खरीदे। उधार देने के लिए कोई तैयार नहीं। इस तरह दर- दर वह भटकता है और पैसे-पैसे के लिए मोहताज हो जाता है। प्रेम के लिए किया गया यह बलिदान प्रेमियों के लिए जाना-पहचाना रास्ता है। परंतु इस उपन्यास की विशेषता एक युवा प्रेमीयों की रोमांटिक कथा नहीं है बल्कि इसमें टीस, दर्द, त्याग, बलिदान और समर्पण की भावना निहित हैं।यह प्रेम हवाई नहीं बल्कि यथार्थ की चट्टानों से टकरानेवाला प्रेम है। मछुआरों की जिंदगी जोखिम से भरी होती है। रोज कमाना और खाना उनकी नियती है और प्रतिदिन मौत के मुँह से निकलकर आना उनका पेशा।

चेम्मीन यानी मछुआरे एक बंद समाज की खुली दास्तान हैं। परंपराओं, रूढ़ियों और मर्यादाओं से बंधा समाज अपने सदस्यों, खासकर महिलाओं को तनिक भी छूट नहीं देता। अशिक्षित और निरक्षर समाज भी रूढ़ियों और अंधविश्वासों से जकड़ा होता है। समाज का कोई सदस्य, खासतौर पर स्त्री, यदि इस मर्यादा का उल्लंघन करने का प्रयास करती है तो समाज उसे तिरस्कृत करता है। महिलाओं को तुरंत भ्रष्ट, अशुध्द और अपवित्र घोषित कर दिया जाता है। इसके अलावा मछुआरे समाज से संबंधिता चाकरा, पोला तथा विवाह संबंधी विधि- विधानों का चित्रण भी किया गया है। चेम्मीन उपन्यास में समाज का एक पात्र के रूप में समाज के नियमों, निरोधों, नैतिक मान्यताओँ को हवा में उड़ाते हुए गहरे प्रेम में बंधे दुखान्त की ओर बढ़ते नायक-नायिका को दिखाया गया है। उनके सामने समाज खलनायक के रूप में उपस्थित है। चेम्मीन में तकषि अरय समाज का विशद चित्र प्रस्तुत करते है। उनके रहन-सहन, परिस्थिति, जीवन-शैली, धारणाएँ, आचार-विचार आदि का संबंध सागर से है। उनके

सारी इच्छाओं की पूर्ति सागर करता है, इसलिए सागर को वे माता मानते हैं। वे अपनी माता के निकट तट पर निवास करते हैं। उनमें आक्षांका नहीं है कि असीम संपदा से पूर्ण सागर माता उनके निकट है तो उनको भविष्य की चिंता नहीं। चाकरा की भारी पकड़ के बाद दूसरी बार भी सागर की ओर जाने वाले चेंपन को उसके मित्र रोक देते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि सागर संपदा लेने की भी एक सीमा है। केरल के सामाजिक क्रम में अरय अवर्ण जाति है और इसलिए वे शोषीत है। चेम्मीन के अरय नवीन सभ्यता की चालाकियों से अछूते हैं। अरय समाज के अपने आचार क्रम है। आचार के अनुसार विवाह करना आवश्यक है। स्त्रीधन देकर लड़की को विवाह के दिन ही पति के घर ले जाना आवश्यक है। चौथे दिन परि-पत्नि को दावत के लिए घर बुलाना होता है। मरने पर शव क गाड़ लेना है, आदि। सामाजिक जीवन को सूखपूर्ण बनाने के लिए इनका पालन आवश्यक है।